

१५

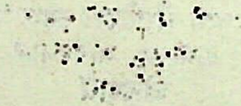
सभी अवश्य पढ़ें।

लेखक

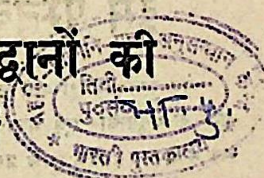
ब्रह्मचारी जी गगहावाले
रणजीत सिंह प्रभुभक्त, (गोरखपुर)

२.५०

अनुसन्धान व्यय—५० पैसे



११ १
कौशलेश्वर कुमार वर्मा बी.काम. बी.एल.
मोतिहारी - ६-८-८९



इस पुस्तक पर विद्वानों की सम्मतियां

संसार में बहुत लोग ऐसे देखे जाते हैं जिनको "पर उपदेश कुशल बहुतेरे" की संज्ञा दी जा सकती है, अर्थात वे दूसरों को उपदेश देने में बड़े कुशल होते हैं किन्तु स्वयं उसका आधान नहीं करके उससे बिलकुल विपरीत आचरण करते हैं। यही कारण है कि विश्वगुरु, चरित्र का धनी यह भारत आज अधः पतन की ओर जा रहा है।

हर्ष की बात है कि सुयोग्य लेखक श्री रणजीत सिंह जी ने जिस विषय पर यह अनुसन्धानपूर्ण पुस्तक लिखी है उसके अनुरूप ही ये सफल प्रयत्न भी कर चुके हैं। लेखक ने समाज के रूढ़िवाद से स्वयं टक्कर लेकर हमारे सन्मुख एक उच्चादर्श रख छोड़ा है।

मैं इस बात को अच्छी तरह जानता हूँ कि रणजीत जी उन व्यक्तियों में से नहीं हैं जो कहते हैं कुछ, और करते हैं कुछ। ये सच्चे निष्ठावान्, कर्मठ, देशभक्त और वीर व्यक्ति हैं। मुझे विश्वास है कि इनकी वीरता जो इस पुस्तक के रूप में प्रकट हुई है यह समाज का मार्गदर्शन कर सकेगी।

इसी आशा के साथ—

योगानन्दस्नातक
दर्शनाचार्य, गुरुकुल मज्झर
रोहतक

पटना
१०-६-६७

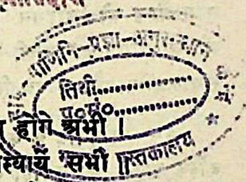
इस पुस्तक पर दूसरी सम्मति

यह पुस्तक गगहा वाले ब्रह्मचारी (श्री रणजीत सिंह प्रभुभक्त) जी के कई वर्षों के अनुसन्धान एवं अध्ययन का निष्कर्ष और हृदय की तड़प है जो शब्दों के रूप में अपना हार्दिक दुःख प्रकट करने के लिये वाध्य हुई है। प्रभुभक्त जी केवल समाजसुधारक, अनुसन्धानकर्ता, लेखक तथा शास्त्रीय संगीतज्ञ ही नहीं हैं बल्कि उत्तम श्रेणी के आयुर्वेदिक अनुभवी चिकित्सक भी हैं। ये राजपूतकुल में पैदा होकर भी किसी कुल को ऊँच या नीच नहीं समझते हैं।

इन्होंने कुछ वर्ष पहले वेद, शास्त्र, स्मृति, रामायण, महाभारत, तथा अनेक पुराण आदि के प्रमाणों के अतिरिक्त इतिहास और विज्ञान की दृष्टि से भरी हुई "सच्ची बातें" नाम की पुस्तक को लिख तथा दो हजार की संख्या में अपने रुपये से प्रकाशित करवा कर साढ़े चौदह सौ पुस्तकों को प्रचारार्थ मुफ्त ही बंटवा दिया था। अतः मैं यह अवश्य लिख सकता हूं कि ये उन व्यक्तियों में नहीं हैं जो जनता के मनपसन्द विषयों पर पुस्तकें लिख-लिख कर अर्थोपार्जन करते रहते हैं, तथा ये उन व्यक्तियों में भी नहीं हैं जो कहते हैं सत्यनारायणव्रत कथा, किन्तु स्वयं बहुत असत्य बोलते हैं। ये इस पुस्तक को लिखने के पूर्ण अधिकारी हैं क्योंकि इन्होंने इस पुस्तक को अपने जीवन में पूर्णरूप से उतार लेने के बाद ही लिखा है इसलिये "यस्तुक्रियावान् पुरुषः स विद्वान्" की लिखी हुई इस पुस्तक से देश तथा मानव जाति के उत्थान एवं विकास में अवश्य सहयोग मिलेगा, इसलिये प्रत्येक देशभक्त तथा समाज सेवकों का कर्त्तव्य है कि इस पुस्तक को आदि से अन्त तक क्रमशः और अक्षरशः खूब ध्यान से पढ़कर घर घर प्रचार करते हुए सच्चे देशभक्त और समाजसेवी बनने का पुण्य लाभ करें।

देवनन्दनशास्त्री शिक्षक
संस्कृत विद्यालय, शेरमपुर
पटना

शेरमपुर
१६-७-६७



प्राक्कथन

हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी।
आओ, विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी।
यह माना, बड़े आपके नामवर थे।
सखावत के पुतले सुजायत के घर थे।
मगर यह तो देखो कि तुम आज क्या हो।
जमाने में तुम किस मर्ज की दवा हो॥

१—आज भारतवर्ष पर विकराल काल के बादल मंडरा रहे हैं। यदि एक ओर ईसाइयत और इस्लाम आज हमें आत्मसात् कर जाने को तत्पर हैं तो दूसरी ओर विदेशी शक्तियां हमें जड़ से निगल जाने के लिये अपना भयंकर जबड़ा फाड़े खड़ी हैं।

२—अनेक समाज सुधारक और ऋषि महात्मा इस भूमि पर जन्मे और सभी नें आर्य हिन्दू समाज के उत्थान के लिये प्रयत्न किया किन्तु आज वही अवस्था है कि— मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों ज्यों दवा की।
आग में शोलें उठें, ज्यों ज्यों हवा की॥

३—ऐसा हो भी क्यों न। सुधारकों और महात्माओं की बात को हमने पल्ले नहीं बांधा। भला कोई बोये बबूल, और उससे खाना चाहे आम, यह कैसे संभव है! उसकी आम खाने की इच्छा तो ठीक वैसी ही होगी, जैसी आकाश से फूल तोड़ने वाली बात।

४—हिन्दू समाज ने जातिवाद का जाल एवं मनगढ़न्त बवण्डर रचकर आपसी फूट का बीज बो रखा है परन्तु अब वह एकता का फल खाना चाहता है, जो सर्वथा असंभव है।

५—इस जातिवादरूपी पिशाच ने ही हिन्दूसमाज के अमरलाल गुरुगोविन्द सिंह जी की पावन भूमि पंजाब में पाकिस्तान को जन्म दिया। और

नागालैण्ड को ईसाइयत की भट्टी में झोंक दिया। श्री सुभाषचन्द्र बोस जो की पवित्र जन्मस्थली बंगाल के दो टुकड़े करवाये और झारखण्ड तथा संथालप्रगना जैसे पवित्र हिन्दू स्थलों पर ईसाइयत को उभारा।

६—जातिवाद के कारण हिन्दू किसी पराये को अपना नहीं बना सके बल्कि अपने को करोड़ों की संख्या में पराया बना चुके और अभी बना रहे हैं। नवीं शताब्दी में काबुल में भी पालवंश के हिन्दू राजा राज्य करते थे किन्तु आज अमृतसर के आगे लाहौर में भी हिन्दू का नाम निशान मिट गया है। यदि हिन्दुओं ने जातिवाद के कोढ़ को दूर नहीं किया तो अगले कुछ ही वर्षों में दिल्ली तक का सारा प्रदेश भी हमारे हाथ से निकल सकता है।

७—हमने जातिवाद के रूप में जो पाप किये हैं आज राष्ट्र उसी का दण्ड भोग रहा है। हिन्दुस्तान में पाकिस्तान बनाना स्वीकार किया हिन्दुओं ने अपनी माताओं, बहनों और बहू-बेटियों को लुटवाना स्वीकार किया, देश को अंग्रेजों और मुसलमानों के हाथ बेचकर गुलामी करना उचित समझा किन्तु जात-पात को तोड़कर एक बनने को तैयार नहीं हुए। इससे स्पष्ट है कि रोग बहुत भयंकर हो चुका है इसलिये इसे दूर करने के लिए कड़ी और कड़वी दवा की जरुरत है। जब भी जातिवाद को दरवाजे के रास्ते से बाहर कर दिया जाता है तो यह खिड़की के रास्ते से फिर भीतर घुस आता है और वेष बदलकर छिप जाता है तथा अवसर पाकर भयंकर हानि कर देता है।

८—याद रखिये, यदि जातिवाद का अन्त नहीं हुआ तो न केवल हिन्दू समाज का, वरन् भारत की स्वतंत्रता का भी अन्त हो जायेगा। जातिवाद के रहते हुए भारत को एक राष्ट्र कहना भारी भूल और अपने आपको धोखा देना है। यहां जितनी जातियाँ या उपजातियाँ हैं उतने ही भिन्न २ राष्ट्र हैं। जिसमें ब्राह्मण का हित है उसमें शूद्र की हानि है। जिसमें वैश्य का हित है उसमें क्षत्रिय की हानि है। इसीलिये विधान सभाओं और

संसद आदि के चुनाव में प्रत्येक मनुष्य अपनी ही तथाकथित जाति के अयोग्य उम्मीदवारों को वोट देकर राष्ट्र की हत्या कर देता है।

९—जातिवाद के कारण योग्य कन्याओं को योग्य वर और योग्य वरों को योग्य कन्याओं का मिलना कठिन हो गया है। परिणामस्वरूप अनमेल विवाह होते हैं और दुराचार फैलता है।

१०—वास्तव में भारतवासी भारतवासी नहीं हैं और हिन्दू-हिन्दू भी नहीं हैं। वे तो ब्राह्मण, बनियां, कायस्थ, नहीं नहीं, वरन् इससे भी आगे सरयूपारीण, मैथिल और शाकद्वीपी हैं तथा ये सभी एक दूसरे को घृणा और बुरी दृष्टि से देखते हैं। जैसे शाकद्वीपी के विषय में कहावत है कि शाकद्वीपी में तीन गुण-विद्यावुद्धि विवेक। लखत लखत में लख पड़े तो लाख ठगों में एक॥ जीभ और जरनी, ये शाकद्वीपी की करनी॥ एक व्यक्ति ने एक शाकद्वीपी से पूछा कि आपके भोजन के लिये क्या प्रवन्ध किया जावे, तो शाकद्वीपी ने कहा कि मेरे लिये कोई विशेष प्रवन्ध करने की जरूरत नहीं है। केवल भात, दाल, दूध, वचका, बरी। वैगन मिले तो चांखा करीं। दही चीनी कटोरवे धरीं हमरा खातिर फिकिर मत करीं॥ गौड़ ब्राह्मण कहते हैं कि पहले गौड़, पीछे और॥ नाई कहते हैं कि पीछे प्रभु ने सृष्टि बनाई, पहले बना दिये वे नाई॥ कुछ लोग कहते हैं कि तुलसी कभी न कीजिये वणिक पुत्र विश्वास। प्रीतिवचन और धनहरण फिर दास का दास॥ जिसका बनियां यार, उसको दुश्मन का क्या दरकार॥ भाई भतीजा भानजा भांट भांड भूमिहार। तुलसी षट् भकार से, सदा रहो होशियार॥ रहत बजावत डुगडुगी रावण के दरबार। जन्म लियो कलिकाल में तब नाम पड़ा भूमिहार॥ ब्राह्मण, कूर्मी और कहार, जस जस बुड्ढा तस तस रार॥ काला ब्राह्मण, गोरा चमार, इनके साथ न उतरें पार॥ शिखा, जनेऊ वेद लिये बीच गंग की धार, एते पै बाभन कहे तौभी न करो इतबार॥ बनिये से दुष्ट नहीं, खेवट नहीं चमार से। जाट से लठैत नहीं, ठग नहीं सुनार से। और जाति की क्या कहूं बद नहीं कुम्हार से॥

एक जाति की दूसरी जाति के प्रति यह घृणा और द्वेष का भाव जातिवाद के कारण ही पैदा हुआ है। इसी के कारण वन्धुता का अभाव हो

गया है। तभी तो एक कवि ने कहा है कि हर शाख पर उल्लू बैठे हैं। अंजाम गुलिस्तां क्या होगा ?

११—जातिवाद का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसके जाल में फँसा हुआ व्यक्ति कभी दूसरी तथाकथित जाति के उस व्यक्ति को भी आदर की दृष्टि से नहीं देखेगा जो सुयोग्य विद्वान् और चरित्रवान् है। अपितु वह उसकी अपेक्षा अपनी तथाकथित जाति के उस व्यक्ति का भी गर्व से नाम लेगा जो पहले वाले से कहीं अधिक चरित्र हीन, ढोंगी और निकम्मा है।

जातिवाद के रंग में रंगा हुआ व्यक्ति पूजा के योग्य व्यक्ति को अपमानित कर सकता है और अपूज्य को सिर पर बैठा सकता है। ऐसी अवस्था में फिर वही होता है जो मनुस्मृति में लिखा है कि अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां च व्यतिक्रमः। त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं, मरणं, भयम्॥ अर्थात्, जहां अपूज्यों की पूजा होती है और पूज्यों की उपेक्षा होती है वहां दुर्भिक्ष, मरण और भय ये तीनों मुसीबतें आ जाती हैं। इस समय हमारे देश में दुर्भिक्ष (अकाल, मंहगी) मरण और भय ये तीनों मुसीबतें आई हुई हैं और सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत आज दाने दाने को मुहताज है।

१२—जातिवाद के कारण ही एक पौराणिक वैश्य और एक आर्यसमाजी वैश्य भिन्न भिन्न धर्म विश्वास रखते हुए भी आपस में वैवाहिक सम्बन्ध करते हैं और एक दूसरे को अपना समझते हैं। इसके विपरीत एक आर्यसमाजी वैश्य, आर्यसमाजी ब्राह्मण या क्षत्रिय को नहीं, वरन् एक पौराणिक वैश्य को ही अपना समझकर विशेष आदर करता है क्योंकि दोनों आपस में वैवाहिक सम्बन्ध कर सकते हैं। राष्ट्र संगठन की दृष्टि से यह बात बड़ी ही घातक है। एक दूसरे से सम्बन्ध जोड़ने में जातिवाद की दीवार ही बाधक है, यदि जातिवाद की दीवार नहीं रहे तो सभी, सभी को अपना समझने लगेंगे।

ब्रह्मचारी जी (गगहावाले)
माघोटेकुआ, पोस्ट—गगहा
गोरखपुर

प्रश्न और उत्तर

प्रश्न—जाति किसे कहते हैं?

उत्तर—न्यायदर्शन में लिखा है कि—"आकृतिर्जाति लिङ्गाख्या" "समानप्रसवात्मिका जातिः"। जिनकी उत्पत्ति, बनावट और आकृति एक समान हो उसे "जाति" कहते हैं अर्थात् जो लाखों करोड़ों में केवल आकृति द्वारा पहचान लिया जावे। जैसे-मनुष्य, हाथी, ऊंट, घोड़ा आदि। इन्हें आकृति से ही पहचान कर अलग २ किया जाता है किन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों की आकृति में इस तरह का कोई भी भेद नहीं है जिससे उन्हें आकृति के द्वारा ही पहचान करके अलग-अलग किया जा सके। इसलिये ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि "जाति" नहीं हैं बल्कि सभी एक मनुष्य जाति के हैं।

प्रश्न—क्या ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि किसी भी वर्ण का पुरुष किसी भी कुल की कन्या से विवाह कर सकता है?

उत्तर—मनुस्मृति [धर्मशास्त्र] में लिखा है कि-"यादृग्गुणेन भर्त्रा स्त्री संयुज्यते यथा विधि। तादृग्गुणा सा भवति समुद्रेणेव निम्नगा"। अर्थात् जैसे नदी समुद्र में मिलकर समुद्र रूप हो जाती है उसी प्रकार स्त्री जिस प्रकार के गुणों वाले पति से युक्त होती है वह उसी प्रकार की हो जाती है। धर्मशास्त्र के इस वचन से सिद्ध होता है कि जिस वर्ण के पुरुष के साथ कन्या का विवाह होता है, कन्या उस पुरुष के ही वर्ण की हो जाती है इसलिये किसी भी कन्या से विवाह किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में विशेष बातें जानने के लिये मेरी लिखी हुई "सच्ची बातें" नाम की पुस्तक को पढ़ना आवश्यक है।

प्रश्न—जब अपनी ही जाति में योग्य जोड़े मिल जायें तो अपनी ही जाति में विवाह करने से क्या हानि है?

उत्तर—शताब्दियों से तथाकथित जातियों का आपस में ही विवाह होते रहने और बाहर का नया रक्त उनमें नहीं मिलने से उन सारी तथाकथित जातियों का रक्त एक ही हो जाता है इसलिये ऐसे विवाह एक प्रकार से भाई-बहन के विवाह हो जाते हैं। एक ही खून के दौरे से सन्तानों के शरीर और मस्तिष्क का विकास रुक जाता है जिससे कालान्तर में समाज के विकास के स्रोत कुंठित होकर उसका ह्रास हो जाता है। अमेरिका आदि देशों में कई बार यह शोर हो चुका है कि ऐसे विवाहों को सरकार द्वारा त्याज्य और दण्डनीय ठहराना चाहिए। इन बातों को जान लेने के बाद अपनी तथा-कथित जाति में विवाह करने तथा कराने वाले को राष्ट्रीय तथा सामाजिक अपराधी घोषित कर देना चाहिए, अन्यथा मानव समाज का क्रमशः और भी अधिक पतन या ह्रास होता जायेगा।

जैसे स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिये बहुत लोगों को अपने प्राण तक देने पड़े हैं, वैसे ही इस जातिवाद को मिटाने के लिये यदि कुछ लोगों को कष्ट भी सहना पड़े तो उसे सहना ही उत्तम है। जिस प्रकार सगी बहन और चाचा मामा की कन्या के साथ वासनात्मक प्रेम बुरा माना जाता है वैसे ही अपनी तथाकथित जाति की कन्या के साथ विवाह को भी बुरा माना जावे और उस विवाह का कानून द्वारा निषेध हो।

प्रश्न—क्या हमारे पूर्वज मानव समाज के ह्रास या पतन के भय से दूसरी जाति की कन्याओं से विवाह करते थे ?

उत्तर—हां, करते थे, तभी तो इसके हजारों उदाहरण भी मिलते हैं किन्तु विस्तार-भय से यहां रामायण, उत्तरपुराण, लिंगपुराण, हरिवंशपुराण, देवीभागवतपुराण, पद्मपुराण एंव महाभारत आदि के अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाहों के थोड़े उदाहरण दे रहा हूं। १—ब्राह्मण यमदग्नि ऋषि ने क्षत्रिय प्रसेनजित की कन्या रेणुका से विवाह किया जिससे परशुराम पैदा हुए। २—ब्राह्मण शुक्राचार्य ने क्षत्रिय राजा प्रियव्रत की कन्या ऊर्जस्वती से विवाह

किया। ३—पुत्रेष्टि यज्ञ कराने वाले शृंगी ऋषि ने क्षत्रिय राजा लोमपाद की पुत्री शान्ता से विवाह किया। ४—ऋचीक ब्राह्मण ने क्षत्रिय राजा गाधि की कन्या सत्यवती से विवाह किया। इन्हीं के पुत्र ऋषि विश्वामित्र हुए। ५ असली सत्यनारायण व्रत की कथा सुनाने वाले ब्राह्मण पिप्पलाद ऋषि ने क्षत्रिय कन्या पद्मा से विवाह किया। ६—विश्वामित्र ने मेनका से शकुन्तला को उत्पन्न किया। शकुन्तला का विवाह राजा दुष्यन्त से हुआ जिनके वीर पुत्र भरत हुए जिनके नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। ७—योगिराज श्री कृष्णचन्द्र के पौत्र अनिरुद्ध ने वाणासुर राक्षस की कन्या से विवाह किया। ८—पद्मपुराण में लिखा है कि ब्रह्माजी ने एक यादव की कन्या को अपनी स्त्री बनाया। ९-ययाति क्षत्रिय ने शुक्राचार्य ब्राह्मण की कन्या देवयानी से विवाह किया। १०—ब्राह्मण कन्या प्रमत्ता का विवाह एक शूद्र से हुआ जिससे महामुनि मतङ्ग ऋषि पैदा हुए। इस तरह के सैकड़ों उदाहरण पुराणों में मिलते हैं।

और लीजिये—सम्राट चन्द्रगुप्त ने यूनान देश के सैल्यूकस की कन्या से विवाह किया जो त० क० अन्तर्जातीय विवाह के साथ अन्तर्राष्ट्रीय विवाह भी था जिसका समर्थन आचार्य चाणक्य ने किया था। अमेरिका की नाग कन्या उलूपी और अर्जुन का विवाह तो संसार प्रसिद्ध है।

वड़ंजूरी नामक विद्वान् का कहना है कि जो मनुष्य उत्तम सन्तान के इच्छुक हैं उन्हें दूसरे कुल या दूसरे देशों में विवाह करना उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार उत्तम फल प्राप्त करने के लिये विदेशी तने पर पैबन्द लगाना।

रामायण का उदाहरण—राजा जनक ने यह प्रतिज्ञा की थी कि जो व्यक्ति धनुष को तोड़ देगा उसी के साथ मैं सीता जी की शादी करूंगा। इसमें त० क० जाति कुल खान्दान की कोई भी प्रतिज्ञा नहीं थी। इसीलिये जहाँ क्षत्रिय वर्ण के श्री रामचन्द्र जी गये हुए थे वहाँ ब्राह्मण कुल में उत्पन्न रावण तथा अन्य भी कई वर्णों के लोग विवाह करने की इच्छा से गये हुए थे।

इस विषय में विशेष ध्यान देने योग्य यह बात है कि पौराणिक लोग कहते हैं कि रावण ने ऋषियों का खून एक घड़ा में इकट्ठा करके जमीन में गाड़ दिया था उसी से सीता जी का जन्म हुआ जिसे राजा जनक ने खेत जोतने के समय खेत में पाया था। यदि इस बात को सत्य मान लें तो सीता जी का जन्म ब्राह्मणों के खून से स्वीकार करना पड़ेगा किन्तु श्री रामचन्द्र जी ने क्षत्रिय होकर भी ब्राह्मणों के खून से पैदा हुई सीता जी से शादी की। इसलिये रामायण तथा रामजी के भक्तों को कन्या के कुल खान्दान पर विचार नहीं करना चाहिए क्योंकि—"कन्या रत्नं दुष्कुलादपि" कन्या एक रत्न है इसे किसी भी कुल से ले लेना चाहिए।

प्रश्न—अन्तर्जातीय विवाह करने से रक्त की पवित्रता नष्ट होती है या नहीं?

उत्तर—जो लोग इस भ्रम में हैं कि त० क० अन्तर्जातीय विवाह करने से रक्त की पवित्रता नष्ट होती है वे लोग हिन्दू समाज के इतिहास को नहीं जानते हैं। देखिये, भागवतपुराण में लिखा है कि राजानीप क्षत्रिय ने शुक्राचार्य ब्राह्मणकी कन्या कृत्वी से विवाह करके ब्रह्मदत्त को जन्म दिया। इसी ब्रह्मदत्त के कुल में मुद्गल ऋषि उत्पन्न हुए और इसी मुद्गल ऋषि से ब्राह्मणों का मौद्गल्य गोत्र चला। साम्ब उपपुराण में लिखा है कि जब रूक्मिनी जी के पुत्र साम्ब जी को कुष्ठरोग हो गया था और जब यहां के चिकित्सकों से साम्ब जी का कुष्ठरोग दूर नहीं हो सका तो रूक्मिणी जी ने शाकद्वीप से ७२ सफल चिकित्सक ब्राह्मणों को कुष्ठरोग की चिकित्सा के लिये बुलाया। जब बहत्तरों ने मिलकर रूक्मिणी जी के पुत्र साम्ब जी के कुष्ठरोग को बिलकुल दूर कर दिया तब उनसे प्रभावित होकर रूक्मिणी जी ने उन बहत्तरों को भारत में ही रख लिया किन्तु इस देश के ब्राह्मणों ने उनके विवाह के लिये अपनी कन्याओं को देना स्वीकार नहीं किया इसपर रूक्मिणी जी ने इस देश की बहत्तर दासी कन्याओं से उन बहत्तरों का विवाह कर दिया और वे

बहत्तरपुर में जाकर बस गये। [illegible] हैं। जिस तरह गर्ग गोत्र के ब्राह्मण गर्ग गोत्र की कन्या से विवाह नहीं करते हैं या अनुचित मानते हैं उसी तरह ये लोग अपने पुर की कन्याओं से विवाह नहीं करते हैं और पूछते या पता लगाते हैं कि आप किस पुर के हैं? यदि दोनों का पुर मिल जायेगा तो विवाह नहीं होगा।

वायुपुराण में लिखा है कि क्षत्रिय राजा प्रियव्रत ने कर्दम ऋषि ब्राह्मण की पुत्री काम्या से विवाह किया जिससे दस पुत्र और दो पुत्रियां हुईं और इन्होंने ही क्षत्रिय वंश का विस्तार किया। इस तरह पूर्ण अनुसन्धान करने से यह सिद्ध होता है कि ब्राह्मणों से लेकर शूद्रों तक कोई भी ऐसी त॰ क॰ जाति नहीं है जिसमें किसी दूसरी त॰ क॰ जाति का रक्त मिश्रण नहीं हुआ हो। इतिहास के विद्वान् इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि— ब्राह्मणों में भी मंगोल, चीनी, यहूदी और ग्रीक रक्त का मिश्रण हो चुका है। हमारे प्राचीन महापुरुष वशिष्ठ, पराशर, वेदव्यास, परशुराम तथा मुद्गिल आदि त॰ क॰ अन्तर्जातीय विवाहों की ही सन्तान थे और हमलोग उन की सन्तान हैं। ऐसी हालत में जो लोग त॰ क॰ जातिभेद को रक्त की पवित्रता बनाये रखने का साधन बताते हैं वे लोग सोलहो आने भ्रम में हैं। ऐतिहासिक युग में शक, हूण और यूची आदि अनेक त॰ क॰ जातियाँ भारत में आईं और हिन्दू समाज ने उन सब को इस प्रकार आत्मसात् कर लिया कि आज उन त॰ क॰ जातियों के भिन्न अस्तित्व का पता ढूढ़ने से भी नहीं मिलता है। यदि तत्कालीन हिन्दू समाज आज की तरह जातिवाद की जंजीर में जकड़ा हुआ रहता और संकुचित विचार का होता तो वह उन त॰ क॰ जातियों को कभी भी नहीं पचा सकता था।

प्रश्न—आधुनिक युग में अन्तर्जातीय विवाह करने में किसी तरह की कोई अड़चन है या नहीं?

उत्तर—आधुनिक युग में त० क० अन्तर्जातीय विवाह करने में किसी तरह की कोई भी अड़चन नहीं है, वल्कि बहुत अधिक सुविधा है, क्योंकि आधुनिक युग में तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र आदि सभी वर्णों तथा कुल, खान्दान के लड़के और लड़कियों को स्कूल और कालेज में सभी विषयों की एक समान शिक्षा-दीक्षा दी जाती है। सभी इकट्ठे पढ़ते हैं। सबका रहन सहन और खानपान समान पाये जा रहे हैं। सभी वर्णों में मांस, मछली, अंडा, शराव, वीड़ी, सिगरेट, गांजा और भांग का सेवन करने तथा नहीं करने वाले, हैं। सभी वर्णों में घुसखोर, चुगलखोर, खुशामदी, मनमें अन्य, वचन में अन्य, कर्म में अन्य, रुपये चुरानेवाले, अवैधरूप से अपने पुत्र-पुत्रियों के नाम लिखवाने, नम्बर बढ़वाने तथा नौकरी में कालावाजार करने वाले चरित्र हीन, स्वार्थ-सिद्धि के उद्देश्य से चुनाव में धांधली या जालसाजी करने वाले, प्रत्यक्ष में नहीं कहकर केवल परोक्ष में निन्दा करने वाले, स्वयं चोरी और धांधली करने के लिये चोरी और धांधली करने में प्रवीण चरित्रहीनों की गुटवन्दी करने वाले, चुनाव में विजयी बनाकर लूटने वाले को भी लूटने में पूरी सुविधा देते हुए उनकी बातों का पालन करने वाले, धांधली का विरोध करने तथा स्पष्ट कह देने वाले को नौकरी या कार्य से हटा या अलग कर देने वाले झूठे, सच्चे, दूकानदार, किसान, प्रोफेसर, इंजिनियर, डाक्टर, वकील, जज, सज्जन, दुर्जन, विद्वान्, मूर्ख, गरीब, अमीर, अच्छे या बुरे पाये जा रहे हैं। कोई भी गुण या दोष सभी वर्णों के लोगों में देखे जा रहे हैं इसलिये आधुनिक युग में त० क० अन्तर्जातीय विवाह करने में कोई भी अड़चन नहीं है।

जब गुप्त या प्रकट व्यक्तिगत लाभ के लिये अधिकांश लोग धांधली या जालसाजी से भरे हुए वर्तमान युग के चुनाव कार्य में सच्ची निन्दा या अड़चन की परवाह नहीं करते हैं तो व्यक्तिगत लाभ से असंख्यगुना ऊंचे उठे हुए देश की उन्नति के कार्य में किसी भी तरह की अड़चन का विचार करना भयंकर नैतिकपतन का लक्षण है।

जो लोग जातिवाद के रोग को दूर करने की बातों को महत्वहीन समझते हैं उन्हें मैं यही समझता हूँ कि उनको देश और समाज की उन्नति से मतलब नहीं है। उन्हें तो केवल स्वार्थ की सिद्धि के लिये किसी भी तरह से रुपये कमाने, जमीन, मकान बनाने, रुपये जमा करने, चार सौ बीस की बदौलत अपने पुत्रों का नाम लिखाने, पढ़ाने, नौकरी दिलाने, खाने पीने तथा समारोहों में शामिल होकर नाच सिनेमा के समान मनोरंजन करने तथा मौज उड़ाने से मतलब है। देश तथा समाज की चारित्रिक उन्नति हो या अवनति हो, इसकी उन स्वार्थियों को कोई परवाह नहीं है इसलिये वे जातिवाद को दूर करके विवाह करने की बातों पर ध्यान नहीं देते। ऐसे व्यक्तियों को देश तथा हिन्दू समाज का गद्दार तथा कौमी नमक हराम जयचन्द ही समझा जा सकता है क्योंकि उन्हें तात्कालिक, क्षणिक व्यक्तिगत स्वार्थ के आगे देश और समाज की कोई चिन्ता नहीं है।

प्रश्न—यदि प्राचीनकाल के लोग किसी भी कुल की कन्या से विवाह करना उचित मानते थे तो आधुनिक युग के लोगों ने ऐसे विवाहों का करना क्यों छोड़ दिया ?

उत्तर—जब भारतवर्ष में अविद्या का अन्धकार फैलने लगा और लोग बुद्धिपूर्वक काम करना छोड़ने लगे तो जैसे अन्य प्रकार के अन्धविश्वास घर बनाने लगे वैसे ही विवाह सम्बन्धी अन्धविश्वास भी उत्पन्न हो गया। बाल-विवाह की हानिकारक प्रथा, "स्त्री शूद्रौ नाधीयेताम्" (स्त्री और शूद्रों को नहीं पढ़ने दिया जावे) का कुत्सित वाक्य, पर्दा, सती, अस्पृश्यता, विधवाविवाह निषेध आदि की कालिमायें उसी अन्धकारयुग की देन थीं जिसमें त० क० अन्तर्जातीय विवाहों का भी निषेध हुआ। अब तो ईश्वर की कृपा से प्रकाश का पुनः आगमन हुआ है और भारतवासियों को अपनी भूलों का पता लगने लगा है, तभी तो हजारों देशभक्त इसमें भी अग्रसर हो चुके और हो रहे हैं। जैसे वैश्य वर्णोत्पन्न महात्मागान्धी के पुत्र देवीदास जी ने ब्राह्मण राजगोपाला-

चार्य की कन्या से विवाह किया। ऐसे ही पं० जवाहरलाल नेहरू जी की पुत्री श्रीमती इन्दिरागान्धी आदि के सैकड़ों उदाहरण हैं।

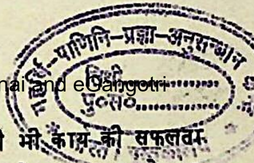
यदि शुद्धि के आन्दोलन को सफल करना चाहते हैं, देश को कमजोर बनानेवाले ऊँच-नीच, द्वेष तथा फूट को दूर करके एकता पैदा करना चाहते हैं, अपनी कन्याओं के विवाह में तिलक दहेज से उत्पन्न विषम परिस्थिति को दूर करके उत्तम विवाह करना चाहते हैं तथा जातिवाद के रोग को निर्मूल करके मानव समाज का विकास चाहते हैं तो तथाकथित आदर्श अन्तर्जातीय विवाह करें और करावें।

रक्षको यत्र भक्षकः

यह सर्वमान्य सत्य है कि जब बगीचे का माली ही बगीचे को उजाड़ने लग जावे तो वहां हरियाली का होना असंभव हो जाता है। अत्यन्त खेद के साथ लिखना पड़ता है कि आज ठीक यही अवस्था हिन्दू समाज की है।

हिन्दू समाज के कर्णधार तथा धर्म के ठेकेदार ही आज इस समाज के विनाश पर उतारु हैं, अन्यथा इसका क्या अभिप्राय है कि इस जातिवाद की बुराइयों को जानते हुए और इसके विरुद्ध उपदेश देते हुए भी विशेष सफलता इस ओर नहीं देख रहे हैं।

किसी कार्य की असफलता में मुख्य दो ही कारण हो सकते हैं। पहला तो यह कि उस कार्य को करने वाला व्यक्ति ही उस कार्य को ठीक नहीं मानता हो, किन्तु किसी परिस्थितिवश या अपने उदर की पूर्ति के लिये उसे करना पड़ रहा हो। दूसरा कारण यह हो सकता है कि करने वाला व्यक्ति कार्य को तो ठीक मानता हो किन्तु झूठे लोकापवाद के भय से अन्तरात्मा से ठीक नहीं मानकर केवल दिखावे अथवा रोजी-रोटी के लिये उसे करता जावे। इन दोनों अवस्थाओं में ही करनेवाला व्यक्ति कार्य के साथ तद्रूप नहीं



हो पाता है जिससे कार्य असफल हो जाता है। किसी भी कार्य की सफलता के लिये सांसारिक लोगों की निन्दा की परवाह नहीं करके सत्यहृदय से उस कार्य में लगना आवश्यक है।

यह स्वाभाविक है कि किसी बात को सुनने वाले व्यक्ति पहले यह देखते हैं कि सुनानेवाला भी उस पर आचरण करता है या नहीं या किसी संस्था में घुसकर अर्थोपार्जन के लिये एक पेशा बनाये हुए हैं।

आज सबसे बड़ी कमी यही है कि हम त० क० अन्तर्जातीयं विवाह करनेवाले को विवाह मण्डप में आशीर्वाद दे देते हैं किन्तु हम स्वयं इससे बहुत पीछे भागते हैं। याद रखिये, ऐसा करना आत्म प्रवंचना तो है ही, साथ ही समाज को धोखा देना तथा सिद्धान्तद्रोह, धर्मद्रोह और देशद्रोह करना भी है।

आत्मा के प्रतिकूल आचरण करनेवाला व्यक्ति "आत्मघाती" की कोटि में आता है और फिर "आत्मघातीविनश्यत्ति" वाली स्थिति होती है। उन्हें तो याद रखना चाहिए कि प्राचीन काल में विवाह सम्बन्ध को वर्ण भेद के कारण से किसी प्रकार की रुकावट नहीं थी। क्योंकि ये वर्ण भेद केवल जीविका और व्यवसाय की दृष्टि से किये थे। विवाह के लिए विभाजित नहीं किये थे।

जातिवाद एक विकराल कोढ़ है। इसको तथाकथित अन्तर्जातीय विवाह के द्वारा दूर किये बिना राष्ट्र स्वस्थ, सबल, सुखी और समृद्ध नहीं हो सकता है।



* भजन *

ईश्वर को भाई कर्म प्यारे हैं ।।

कर्महीन कोई क्यों ना होवे श्रेष्ठ गति को पावे ना ।
शूद्र करे भक्ति मन लाकर इधर उधर मन चलावे ना ।
काम क्रोध मद लोभ तजे वपयों में मन को चलावे ना ।
वेद पढ़े पट् शास्त्र पढ़े षट् कर्म करे शर्मावे ना ।
निश्चय पावे परमधाम किसी विधि से कोई हटावे ना ।
श्रेष्ठ पुरुषों में दर्जा मिले कभी मन बीच शंका लावे ना ।
जन्म जाति का जोर चले ना निष्फलकर्म कभी जावे ना ।
जात-पांत कोई मत पूछे, कर्म करारे है ।। ईश्वर को० ।

मुझे इस पुस्तक के प्रकाशन में गुरुकुल झज्झर के श्री योगानन्द स्नातक, श्री देवेन्द्र जी बी० ए०, बी० एल० तथा वाणी प्रेस के सर्वश्रेष्ठ कार्यकर्ता श्री देवनारायण प्रसाद जी से बहुत सहायता मिली है अतः मैं इनका कृतज्ञ हूँ ।

लेखक

आवश्यक सूचना

वे सज्जन मुझसे जवाबी कार्ड पर निम्न पता से व्यवहार करें जो—

१—अपने पुत्र एवं पुत्रियों का त० क० अन्तर्जातीय विवाह करना चाहते हों,

२—इस पुस्तक को प्रचारार्थ अपनी तरफ से प्रकाशित कराना चाहते हों,

३—केवल कन्या ही कन्या पैदा होती हों तो निश्चित रूप से केवल पुत्र ही पैदा करना चाहते हों,

४—वन्ध्यापन को दूर करके सन्तान चाहते हों,

५—वातरोग गठिया तथा गलितकुष्ठ को दूर करना चाहते हों,

६—स्त्रियां प्रदर रोग से मुक्ति पाना चाहती हों।

पता—रणजीत सिंह
भगवान मिस्त्री फर्नीचर वाले
मछुआटोली, पटना-४ (बिहार प्रान्त)

मुद्रक—वाणी प्रेस, पटना-४